अभागे को भाग्यशाली बनाना आसान थोड़े ही है...!

अशोक शर्मा

संत जी १९८० से दुखियों का भला कर रहे हैं! हफ्ते भर में हज़ारों आदमीं, औरत, जवान, बूढ़े, अपनी-अपनी समस्या लेकर संत जी के घर की चौखट पे दस्तक देते हैं!

हर रोज़ सांय ५ बजे से ९ बजे तक और शनिवार, इतवार सुबह से शाम तक दरबार लगता है !

संत जी किसी महकमें में जूनियर इंजिनियर के पद पर आसीन थे ! आजकल सेवा निवृत हैं और सपरिवार घर में रहते हैं! यूं संत जी शुरु से ही दैवी शक्तियों को समर्पित थे और आफिस का काम नाम मात्र ही करते थे! एक बार किसी अफसर ने भूल से उनका तबादला घर से दूर कर दिया... बस फिर क्या था अफ्सर का लड़का लाइलाज बीमार पड़ गया ..... और अफ्सर गिड़गिड़ाता हुआ संत जी के चरणों में आकर क्षमा माँग कर गया ! तब जाकर बच्चे की बीमारी ठीक हुई ! तो साहब, घर का एक छोटा सा कमरा दीन दुखियों के लिये आरक्षित कर दिया गया है! एक कारनस पर हर मजहब के देवी देवताओं की तस्वीरें रखी हुई हैं ! फर्श पर दुखियों के लिए दरी बिछा दी गयी है! एक कोने में संत जी की कुर्सी है जिसके आगे मेज पर कीलें, लौंग, इलायची, छुआरे आदि डिब्बों में भरे पड़े हैं ! ऊपर की ओर अलमारी में कुछ जड़ी बुटियाँ व दवाइयाँ रखी हैं ! मेज़ की दायीं तरफ एक गोलक बना दिया गया है ! एक मोर पँख का झाड़ू दायें हाथ के पास शोभायमान है ! दृष्टा होने के साथ-साथ संत जी बिना डिग्री के डाक्टर भी हैं और हर बिमारी का इलाज आपके पास है !

अभागे दीन-दुखी दरी पर बैठ जाते हैं और कायदे से अपनी-अपनी बारी का इंतज़ार करते हैं ! संत जी के लिए सब बराबर हैं- रिक्शा वाले से लेकर बी. एम. ढब्बलयू. वाले तक ! आऊट-आफ-टर्न देखने का रिवाज़ बिलकुल नहीं है ! पहले आओ और पहले सेवा पाओ !

संत जी की विद्या कुछ अलग तरह की है! संत जी कोई हकीम, वैद्य, ज्योतिषी, वास्तु-शास्त्री या रैकी-मास्टर नहीं हैं! आप को किसी कुंडली की आवष्यकता नहीं! हां दुखी व्यक्ति के हाथ लगे गेहूं के दाने या चने के दाने लेकर जाने होंगे ! बस फिर क्या है- संत जी प्रार्थना करते हैं या मंत्र कलमा पढ़ते हैं- शायद किन्ही शहीदों को याद करते हैं और बातचीत का सिलसिला कुछ इस तरह शुरु होता है ..

संत जी:

१) जीवन में कितने उतार-चढ़ाव देखे हैं ?

२) समय कितने साल से खराब चल रहा है ?

३) खानदान में कोई बेऔलाद तो नहीं मरा ? दादा परदादा, उनके बहन, भाई, बच्चों को याद करके बताना पड़ता है ?

४) घर के सामने कोई टोना हुआ मिला था ? याद कीजिए, जब तक याद न आ जाए - रास्ते में, चौराहे में..!

५) कभी कभी ऐसा लगता है कि पीछे से कोई बुला रहा है ?

६) अकेले में रोने का मन करता है ?

७) कभी ऐसा लगता है जैसे अभी अभी कोई पास से निकला हो ?

८) बैठे बैठे झटका आता है ?

९) किसी को पुराने कपड़े तो नहीं दिये थे ?

१०) कोई अनहोनी मौत तो खानदान में नहीं हुई ?

अब आपका पूरा खाका तैयार है ! देखिए, जल्दबाजी से कुछ ठीक होने वाला नहीं ! समय लगेगा, उपाय करने पड़ेंगे - आपको भी और संत जी को भी !

एक साइकलोसटाईल लिस्ट दे दी जाती है - जिसमें कपड़े, लत्ते, बादाम, छुआरे पैसे आदि का दान है ! पैसे की जगह खाली है - वह आदमी की औकात देख कर तय की जाती है ! मोर पंख के झाड़ू से नि:शुल्क झाड़ दिया जाता है ! गोलक में यथाशक्ति पैसा डाल दिया जाता है । संत जी को कोई लालच नहीं है!

बीच बीच में फोन बजता रहता है- कनाडा से फोन है- एक औरत अपना दुख ब्यान करती है ! संत जी कहते हैं- बीबी मुसलमानी पहरा है, चीज़ खुन में चली गई है- समय लगेगा ! उपाय बहुत मुश्किल हैं - ४० दिन या ४० हफ्ते- एक भी नागा पड़ा तो..!

अभागे को भाग्यशाली बनाना आसान थोड़े ही है...!

****